रंगमंचीय परिप्रेक्ष्य में 'महाबली' नाटक

प्रा.डॉ. सदानंद भोसले
पूर्व-अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
skbhosale3131@gmail.com

श्री. प्रदीप रंगराव जटाळ
सहा. प्राध्यापक एवं विभागप्रमुख
पार्वतीबाई चौगुले कला एवं विज्ञान महाविद्यालय,
(स्वायत्त) मड़गांव-गोवा
prjatal1982@gmail.com

शोध सारांश-

साहित्य की सभी विधाओं में 'नाटक' को सबसे सशक्त, प्रभावशाली और लोकप्रिय विधा के रूप में जाना जाता है, जिसका प्रत्यक्ष संबंध सामाजिक से होता है। नाटक सामान्य जन से सीधी बात करने का सबसे कारगर तरीका है। बावजूद इसके किसी भी नाटक की सार्थकता एवं सफ़लता उसके सफ़ल मंचन से ही सिद्ध होती है। असग़र वजाहत ने 'महाबली' नाटक में मध्यकालीन विचारों के लोकतंत्रिकरण पक्ष को उजागर करने के लिए तुलसीदास के विरोधी सनातनी पंडित, शिव भक्त पंडित, घाट के मालिक तथा निराकार ब्रह्मवादी आदि चरित्रों के माध्यम से बहुत रोचक एवं नाटकीय ढंग से प्रस्तुत किया है। कथानक में तीव्र आवेग और चरम नाटकीयता से भरपूर इस नाटक में रामचरितमानस की चैपाइयों का गायन और संगीत का विशेष महत्त्व है। बशर्ते दृश्यों के साथ इसका संयोजन उचित एवं कलात्मक ढंग से होना चाहिए। अभिनेयता की दृष्टि से यथास्थान उपयुक्त रंग-संकेत हैं । नाटक के संवाद मार्मिक, चुटीले एवं व्यंग्यात्मक हैं जो अभिनयानुकूल प्रतीत होते हैं। नाटक में वातावरण निर्मिति के लिए प्रयुक्त ध्वनि एवं प्रकाश योजना भी दृश्यानुकूल है। कुल मिलाकर महाबली नाटक में नाटककार ने अन्य नाट्य रचनाओं की भांति मंचीयता की सभी संभावनाओं को सृजित किया है।

संकेताक्षर - विचार का लोकतंत्रिकरण, अंक-दृश्य योजना, अभिनय, ध्वनि योजना, प्रकाश योजना, मंचसज्जा, वेशभूषा, संवाद, नाट्यभाषा, गीत एवं संगीत, मंचीय उपकरण आदि।

असग़र वजाहत एक जनधर्मी नाटककार हैं। उनके नाटक सामाजिक सरोकारों की कथावस्तु को एक ऐसा ज्वलंत और रोचक स्वरूप देते हैं जो दर्शकों को लगातार बांधे रखता है। साथ ही मानवीय समस्याएँ और मानव सम्बन्धों की गहन पड़ताल भी उनके नाटकों की विशेषता है। सन् 2019 में प्रकाशित 'महाबली' असग़र वजाहत का पूर्णकालिक नाटक है। जिसमें उन्होंने भारतीय इतिहास के दो महान समकालीन चरित्र सम्राट अकबर और तुलसीदास को अपनी कल्पना के केंद्र में रखकर रचना की है। इतिहास में इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि अकबर और तुलसीदास की कभी भेंट हुई थी। लेकिन राजसत्ता और कला के परस्पर सम्बन्धों पर विस्तृत चर्चा करने के लिए नाटककार ने काल्पनिक ढंग से दोनों की भेंट कराई है। जहाँ एक ओर गोस्वामी तुलसीदास बनारस के घाट पर बैठकर अपना सम्पूर्ण समय ध्यान, भक्ति और साहित्य में लगाते थे, वहीं मुगल सल्तनत के बादशाह सम्राट अकबर चाहते थे कि गोस्वामी तुलसीदास सीकरी आकर उनके दरबार की शोभा बढ़ायें। अकबर ठहरे महाबली जिसे चाहे आदेश दे सकते थे और उनके आदेशों का पालन करना प्रजा का कर्तव्य था। किन्तु तुलसीदास सम्राट अकबर के अनुरोध को मानने से इनकार कर देते हैं। राजसत्ता और कलाकार की स्वाधीनता का यह द्वंद्व ही इस नाटक का मुख्य विषय है। 'महाबली' सम्राट अकबर का प्रिय सम्बोधन था लेकिन जब गोस्वामी तुलसीदास अकबर का कहना मानने से इनकार करते हैं तब उनके महाबली सम्बोधन पर प्रश्नचिह्न लग जाता है।

नाटक में जहां एक ओर सम्राट अकबर और तुलसीदास की मुख्य कथा चलती हैं वही दूसरी ओर तुलसीदास और उनका तीव्र विरोध करने वाले तत्कालीन पंडितों की। जिसमें घाट के मालिक-बिशन महाराज, सनातनी पंडित-आचार्य चन्द्रकान्त मिश्र, सनातनी पंडित का शिष्य-भोला पंडित, शिवभक्त-पंडित गंगाधर पांडे, और निराकार ब्रह्मवादी-पंडित त्रिभुवनदास आदि की प्रासंगिक कथाएँ चलती हैं।

किसी भी नाटक में मंचीयता की दृष्टि से दृश्य विभाजन, पात्र योजना, संवाद, गीत एवं संगीत, रंग निर्देश, ध्वनि योजना, प्रकाश योजना, अभिनय और नाट्य भाषा आदि तत्व आवश्यक होते हैं। 'महाबली' नाटक की मंचीयता को निम्न मंचीय तत्वों के आधार पर परखा जा सकता है-

दृश्य विभाजन:-

किसी भी नाटक के सफ़ल मंचन की दृष्टि से उसकी कथावस्तु का अंक या दृश्य विभाजन सुचारु ढंग से होना चाहिए। इसके माध्यम से नाटक की मूलसंवेदना आरंभ से अंत तक प्रवाहित होती है। असग़र वजाहत ने 'महाबली' नाटक को बारह दृश्यों में विभाजित किया है। जिससे नाटक को छोटे-छोटे दृश्यों में विभाजित करके बड़ी सरलता से मंचित किया जा सकता है। सोलह शाताब्दी के बनारस घाट के दृश्य से नाटक आरंभ होकर उसी घाट पर सम्राट अकबर और तुलसीदास की भेंट और दोनों के बीच एक लंबी बहस के साथ समाप्त होता है। प्रथम दृश्य की दृश्य-योजना में सोलहवीं शताब्दी के बनारस के कुछ दृश्य एक मोनताज (Montage) के रूप में दिखाई देते हैं। यह मोनताज तत्कालीन समय एवं परिवेश को दर्शाता है। किन्तु मोनताज बनाते समय विशेष सतर्कता एवं सावधानी बरतने की आवश्यकता है। अन्यथा आरंभ में ही नाटक का प्रभाव खंडित हो सकता है। इस दृश्य में बनारस की गलियों में तुलसीदास उनका शिष्य रामू द्विवेदी को घूमते दिखाया है। साथ ही इस दृश्य में काशी विश्वनाथ का मंदिर भी दिखाया है जहां आरती उतारी जा रही है। दृश्य के अंत में कमला देवी उनसे मिलती है। दृश्य दो अब्दुल रहीम खानखाना की हवेली के फाटक का है। जहां पर दो सिपाही वीर सिंह और शेर अली पहरा दे रहे हैं। सामने सड़क पर से फेरीवाले जिसमें- चने बेचनेवाला, पान बेचनेवाला और ककड़ी बेचनेवाला जोर जोर से गा-गाकर चना,पान और ककड़ी बेचते हैं। इस दृश्य में अब्दुल रहीम और टोडरमल की भेंट दिखाई हैं। वही कमला देवी के माध्यम से तुलसीदास की महानता भी दर्शाई है। दृश्य तीन रात के समय में रामचरितमानस की चौपाइयों का पाठ हो रहा है। जिसमें उनके शिष्यों के साथ बड़ी संख्या में श्रद्धालु उन्हें सुन रहे हैं। इसी बीच तुलसीदास के विरोधियों द्वारा मंच पर इधर-उधर से पथराव शुरू होता है और एक हड्डी भी मंच पर आकर गिरती है। यहाँ पर तुलसीदास और उनके विरोधी सनातनी चंद्रकांत मिश्र और उनका चेला भोला पंडित के बीच बड़े मार्मिक तथा व्यंग्यपरक संवाद हैं। दृश्य चार में अकबर टहल रहे हैं एक सेवक आकर उन्हें राजा टोडरमल के आने की सूचना देता है। इस दृश्य में राजा टोडरमल द्वारा रामचरितमानस की चौपाइयाँ सुन सम्राट अकबर तुलसीदास को अपने दरबार में शामिल करने की योजना बनाते हैं।

दृश्य पाँच में रात का समय दिखाया है। गंगा घाट की सीढ़ियों पर तुलसीदास अपने शिष्यों और भक्त गणों के साथ बालकाण्ड का पाठ कर रहे हैं। बालकाण्ड की चौपाइयों से दृश्य का आरंभ होता है। इस दृश्य में तुलसीदास की कुटिया में विरोधियों द्वारा आग लगाई जाती है। बड़ी मुश्किल से रामचरित मानस की पोथी को बचाया जाता है। दृश्य छह में अब्दुल रहीम और राजा टोडरमल सम्राट अकबर की उपलब्धियों पर चर्चा कर रहे हैं। इतने में तुलसीदास का मंच पर प्रवेश होता है। रहीम और टोडरमल उन्हें अकबर के निमंत्रण पर सीकरी भेजने का प्रस्ताव रखते हैं लेकिन तुलसीदास बहाना बनाते हैं। दृश्य सात सम्राट अकबर के दरबार का है जिसमें अकबर राम-सीता के चित्रों के आधारपर 'रामटका' बनाने की औपचारिक घोषणा करते है। दृश्य आठ में सड़क के किनारे एक नुक्कड़ पर तुलसीदास रामलीला की तैयारी कर रहे हैं। सब्जी बेचनेवाली कुंजडिन अपने सिर पर टोकरा रख के आवाज़ लगाती है। इस दृश्य में तुलसीदास विरोधी चरित्रों में आपस में झगड़े दिखाए हैं। दृश्य नौ में तुलसीदास के विरोधियों की एक बैठक होती है जिसमें यह चर्चा होती है कि तुलसीदास की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है और उन्हें जल्दी चुप नहीं किया गया तो सबके लिए बहुत खराब होगा। दृश्य दस में तुलसीदास अपनी कुटिया के सामने श्रद्धालुओं के सामने रामचरितमानस का पाठ कर रहे हैं। इतने में एक गर्भवती महिला बसंती मंच पर आकर तुलसीदास को बदनाम करने के लिए उनपर आरोप लगाती है। इस दृश्य में तुलसीदास विरोधियों के बीच हाथापाई होती है कुछ गुंडों द्वारा तुलसीदास पर चाकू से हमला भी किया जाता है। किन्तु वे बच जाते हैं। दृश्य ग्यारह में टोडरमल कुछ पढ़ रहे हैं तुलसीदास मंच पर आते हैं और रामचरित मानस की पाण्डुलिपि उनके पास रखना चाहते हैं ताकि सुरक्षित रहे। टोडरमल उन्हें सीकरी जाने की सलाह देते हैं। तुलसीदास मना कर देते हैं। दृश्य बारह काल्पनिक है। इसमें नाटककार ने बनारस के घाट पर स्वप्न में तुलसीदास और सम्राट अकबर की भेट कराई है। और यहाँ दोनों के बीच महाबली कौन है? इस पर काफ़ी चर्चा होती है और नाटक के अंत में अकबर महाबली न होकर तुलसीदास महाबली हैं यह सिद्ध होता है।

पात्र एवं अभिनय -

रंगमंच पर नाटक की सफ़लता की दृष्टि से पात्र योजना अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। नाटक की वस्तु का वहन पात्रों द्वारा होता है। 'महाबली' नाटक में उन्नीस पात्र हैं। प्रमुख पात्रों में तुलसीदास, अकबर, अब्दुल रहीम ख़ानख़ाना और राजा टोडरमल हैं। तथा सहायक पात्रों में घाट के मालिक-बिशन महाराज, सनातनी पंडित-आचार्य चन्द्रकान्त मिश्र, सनातनी पंडित का शिष्य-भोला पंडित, शिवभक्त-पंडित गंगाधर पांडे, और निराकार ब्रह्मवादी-पंडित त्रिभुवनदास, रामू द्विवेदी, रामदीन, राम प्रसाद, अबुल फ़ज़ल, मुला बदायूनी, कमला देवी, बसंती, भोला पंडित, रमाकांत गुंडा-1 गजाधर गुंडा-2 आदि पात्रों को बख़ूबी उनके चरित्रानुकूल दर्शाया है।

नाट्य प्रस्तुति के तत्वों में अभिनय सबसे मूलभूत और महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है। नाटक मंचित होने पर ही उसे पूर्णत्व प्राप्त होता है और वह अभिनय के द्वारा सिद्ध होता है। 'महाबली' नाटक में अभिनय की दृष्टि से पर्याप्त संकेत दिए हैं। तुलसीदास नाटक के बहुत जाने-पहचाने और प्रचलित पात्र हैं। राम के प्रति उनका समर्पण अद्वितीय था। "उनका अभिनय करनेवाले पात्र को लगातार कल्पना और यथार्थ के बीच आवाज़ाही करनी होगी।"[1] तुलसीदास के अभिनय में जहां एक ओर सहजता और सादगी की आवश्यकता है। वहीं दूसरी ओर उनके व्यक्तित्व में बहुत लचीलेपन के साथ-साथ बहुत दृढ़ता भी दिखाई देती है। इसलिए उनका अभिनय करनेवाले पात्र से बड़ी सतर्कता से अभिनय की मांग करता है। वहीं सम्राट जलाउद्दीन अकबर का व्यक्तित्व प्रतिभा और जिज्ञासा से भरा हुआ गंभीर, रौबदार और महाबली दिखाया है। इसलिए अकबर का अभिनय करनेवाले पात्र में सम्राट अकबर की झलक दिखनी चाहिए। विशेषकर वाचिक और आहार्य अभिनय में प्रमाताओं को वह सम्राट अकबर प्रतीत हो। दूसरी ओर अब्दुल रहीम ख़ानख़ाना और राजा टोडरमल सम्राट अकबर के वफ़ादार होते हुए भी तुलसीदास के मित्र हैं। जो सम्राट के आदेश का पालन करने के लिए विवश हैं किन्तु तुलसीदास की विवशता को भी समझते हैं। उनका अभिनय करनेवाले पात्रों के चरित्र में यह अंतर्विरोध बहुत स्पष्ट रूप से चित्रित होना चाहिए।

तुलसीदास विरोधी पात्र एकांगी हैं। वे बड़ी दृढ़ता से अपने विश्वास पर जमें हुए हैं और कभी भी किसी भी तरह संदेह को कोई जगह नहीं देते। इसमें विशेषकर चन्द्रकान्त मिश्र और भोला पंडित महत्त्वपूर्ण पात्र हैं। भोला पंडित नाम का पात्र सदा व्यंग्य कसता रहता है। उसे अधिक जीवंत बनाने के लिए पान खाने का शौकीन दिखाया है। इसलिए भोला पंडित का अभिनय करने वाले पात्र से जानदार अभिनय की आवश्यकता है। नहीं तो नाटक का प्रभाव फीका पड़ सकता है।

संवाद -

संवाद नाटक का प्राण तत्व होते हैं। संवाद नाटक में केंद्रीय तत्व हैं जो कथाविस्तार को गतिमान बनाकर विविध आयाम प्रदान करते हैं। मंच पर नाटक की सफ़लता संवादों पर ही निर्भर होती है। 'महाबली' नाटक के संवाद खड़ीबोली में हैं किन्तु उस पर हल्का-सा अवधी भाषा का कलेवर चढ़ाने की कोशिश की गई है। नाटक के संवाद पात्रानुकूल एवं अभिनयानुकूल हैं। नाटक में अधिकतर मार्मिक, व्यंग्यात्मक, भावात्मक, अधूरे और दीर्घ संवादों का आवश्यकतानुसार प्रयोग हुआ है। जिसके माध्यम से नाट्यकथा के उद्देश्य को अपने लक्ष्य तक पहुंचाने में ये संवाद सफ़ल हुए हैं। नाटक में राजसता और कलाकार के द्वंद्व को उद्घाटित करने में अर्थपूर्ण एवं मार्मिक संवादों का महत्व अनन्यसाधारण रहा है। दृश्य ग्यारह में तुलसीदास का चरित्रानुकूल संवाद है। यथा- "...जिसकी रक्षा मर्यादा पुरुषोत्तम राम कर रहे हों उसका क्या बिघाड़ेंगे।"[2] ठीक इसी तरह दृश्य बारह में सम्राट अकबर बादशाह का संवाद चरित्रानुकूल है। यथा- "...क्या बक रहे हो। हम...दो करोड़ लोगों पर हुकूमत करते हैं...हमारे ख़जाने लबालब भरे हुए हैं...क्या है जो हमारे पास नहीं है...हीरे-जवाहरात के ढेर...सोने चांदी के अंबार...हम जब चाहें हमारे मंसबदार हिन्दुस्तान के किसी भी कोने में हज़ारों की फ़ौज जमा कर सकते है..."[3] नाटक में मुगल बादशाह अकबर के अगवानी में की गई घोषणाओं से तत्कालीन दरबारी वातावरण को निर्माण करने का प्रयास किया है। यथा- "बाअदब, बामुलाहिज़ा, होशियार, अबुल फतेह, साहिबे जमाँ, पादशाहे ग़ाज़ी, ज़िल्हे सुब्हानी, सिकन्दरे सानी, शहंशाहे हिन्दोस्तान, महाबली जलाउद्दीन मोहम्मद, अकबर तशरीफ़ लाते हैं।"[4] नाटक के अंतिम दृश्य में अकबर के संवादों में दीर्घ संवादों का प्रयोग किया है। इस प्रकार नाटक में नाटकीयता के साथ तत्कालीन परिवेश को उद्घाटित करने में नाटक के संवाद सफ़ल हुए हैं।

रंग संकेत -

नाटककार द्वारा नाटक में दिए गए रंग संकेतों की सहायता से ही पात्र अभिनय प्रस्तुत करते हैं। रंग संकेतों के अंतर्गत रंग-सज्जा, वेशभूषा, पात्रों की आयु आदि से संबन्धित निर्देश दिए जाते हैं। यही रंग निर्देश नाटक के सफ़ल मंचन में सिद्ध होते हैं।

'महाबली' नाटक में असग़र वजाहत ने प्रत्येक दृश्य में अभिनयानुकूल रंग संकेत दिए हैं। जैसे- हँसते हुए मजीद से, थैली पकड़ाते हुए मजीत से, गिड़गिड़ाते हुए, उसे रोकते हुए, रोती हुई, खुश होकर, चिल्लाकर कुछ क्रोध में, आश्चर्य से, व्यंग्य से, धमकानेवाले स्वर में, बिगड़कर, भोला पंडित हाथ में पान लिए, पान चन्द्रकान्त की ओर बढ़ाते हुए, तीन बार झुक कर सलाम करने के बाद, बात काटकर, फ़रमान को लपेटते हुए, हाथ जोड़कर, कुछ देर सोच कर, दबी जुबान से, बैठे हुए लोगों की तरफ़ इशारे करते हुए, बहुत ऊँची आवाज़ में, पान मुंह में डालते हुए, गरजती हुई ऊँची आवाज़ में, धीरे से, इधर-उधर देख कर कुछ कमजोर आवाज़ में, कुछ ठहर कर, निराश और हताश स्वर में आदि रंग संकेतों के कारण नाटक अभिनयानुकूल हो जाता है।

ध्वनि एवं प्रकाश योजना -

रंग प्रस्तुति में अन्य तत्वों की भांति ध्वनि एवं प्रकाश योजना का अनन्य साधारण महत्त्व है। इनके उचित संयोजन से रंग प्रस्तुति को प्रभावपूर्ण बनाया जाता है। 'महाबली' नाटक में देशकाल वातावरण के निर्माण में नाटकाकर ने ध्वनि एवं प्रकाश व्यवस्था का बख़ूबी प्रयोग किया है। ध्वनि संकेतों के माध्यम से दर्शकों को वास्तविकता का आभास कराने का कार्य किया जाता है। दृश्य दो में अब्दुल रहीम से मिलने राजा टोडरमल जब आते हैं तब उनके घोड़ों के टापों की आवाज़ सुनाई देती हैं। यथा- "घोड़ें की टापों की आवाज़ सुनाई देती है और नजदीक आकर रुक जाती है।"[5] मंच पर घोड़े को दिखाना संभव नहीं है इसलिए टापों की आवाज़ में रिकार्डेड ध्वनियों की सहायता लेनी होगी। इसी तरह दृश्य बारह में जहां अकबर और तुलसीदास की स्वप्न में काल्पनिक भेंट कराई जाती है वहाँ रात के सन्नाटे को दर्शाने के लिए तेज़ हवा और पेड़-पत्तों की आवाज़ों के साथ सियारों की आवाज़ को ध्वनित किया है। यथा- "रात का समय है।...चारों तरफ सन्नाटा है। तेज हवा चलने से पेड़ से पत्तों का शोर सुनाई देता है। दूर से सियारों की आवाज़े आती हैं। घाट की सीढ़ियों से पानी टकराने की ध्वनि भी सुनाई देती है।"[6] इस प्रकार नाटक में वातावरण निर्मिति हेतु ध्वनि योजना के उचित संकेत प्राप्त होते हैं।

रंग प्रस्तुति के समय देशकाल और घटना स्थलों को प्रकाश व्यवस्था के माध्यम से स्पष्ट रूप से दिखाया जाता है। महाबली नाटक में मंचन की दृष्टि से और नाटक के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए प्रकाश व्यवस्था संबंधी समुचित संकेत दिए हैं। दृश्य आठ के अंत में नाटककार ने तुलसीदास विरोधियों की नास्तिकता के कारण बहुत आहत होते हैं। उसे दिखाने के लिए उन पर प्रकाश डाला गया है। यथा- "सब एक-दूसरे से लड़ने-झगड़ने लगते हैं... तुलसीदास मंच के कोने में बहुत दुखी मन से पूरा दृश्य देखते हैं।"[7] इसी तरह दृश्य बारह में तुलसीदास और सम्राट अकबर की स्वप्न में काल्पनिक भेंट दिखाने के लिए मंच पर नीली रोशनी की सहायता ली है। यथा- "तुलसीदास करवट बदलते हैं और सो जाते हैं। धीरे-धीरे मंच पर नीली रौशनी फैलने लगती है जो क्रमशःबढ़ती है। घाट की सीढ़िया दिखाई पड़ती हैं।"[8] असग़र वजाहत ने काल्पनिक दृश्य को दिखाने के लिए स्वप्न का सहारा लिया है और दर्शकों को स्वप्न में ले जाने के लिए नीली रौशनी का प्रयोग किया है। नाटककार ने 'गोडसे@गाँधी.कॉम' नाटक के दृश्य ग्यारह में भी इसी तरह गाँधीजी और कस्तूरबा की भेंट दिखाने के लिए काल्पनिक दृश्य की योजना करते हुआ मंच पर नीली रोशनी से स्वप्न को दिखाने का सफ़ल प्रयास किया है।

गीत एवं संगीत-

भारतीय समाज में नृत्य एवं संगीत का महत्व बहुत अधिक है। नाटक में संगीत के उद्देश्य एवं प्रभाव को समझाते हुए रंगदर्शन में नेमिचन्द्र जैन लिखते हैं, "संगीत का उद्देश्य कुछ यथार्थवादी प्रभाव उत्पन्न करना अथवा गीतों की धुनें बनाना मात्र नहीं, बल्कि नाटक के समन्वित, समग्र प्रभाव को अधिक तीव्र और सघन करना हो गया।"[9] 'महाबली' नाटक में असग़र वजाहत ने विषयवस्तु एवं देशकाल वातावरण का यथार्थ प्रभाव उत्पन्न करने के लिए गीत एवं संगीत का प्रयोग यथास्थान किया है। नाटक में देशकाल एवं तत्कालीन परिवेश को यथार्थ बनाने के लिए रामचरित मानस से बालकाण्ड, किष्किंदा काण्ड और पुष्पवाटिका प्रसंग आदि से चौपाइयों का प्रयोग किया है। साथ ही चौपाइयों का पाठ करते हुए संगीत वाद्यों का भी सहारा लिया है। दृश्य आठ में कृष्ण भक्तों द्वारा रामलीला में व्यवधान डालने मंच पर कृष्ण भजन गाते हुए आते हैं। यथा- "...मंच पर कुछ कृष्ण भक्त मंजीरा ढोलक बजाते, कृष्ण भक्ति का गीत ' मइया मोरी मैं नहीं माखन खायो...' गाते हुए प्रवेश करते हैं और तन्मयता से गाने लगते हैं।"[10] ठीक इसी तरह नाटक के अंतिम दृश्य बारह में मंच पर जब आवाज़ फेड आउट होती है तब रामभक्त गीत गाते हुए मंच पर आते हैं। यथा- "आवाज़ फेड आउट होती है और उसी के साथ मंच के दाहिने और बायीं ओर से राम भक्तों की दो टोलियाँ संगीत बजाती, नाचती-गाती और दोहे का गायन करती मंच पर आ जाती है।"[11] इस प्रकार वातावरण निर्मिति के साथ नाटक में समग्र प्रभाव के लिए गीत-संगीत का उचित प्रयोग किया है।

मंचीय उपकरण-

नाट्य मंचन में मंचीय उपकरणों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। 'महाबली' नाटक में कथावस्तु की आवश्यकता तथा देशकाल वातावरण को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने के लिए विविध मंचीय उपकरणों का प्रयोग किया है। जिसमें- धनुष्य बाण, त्रिशूल, आरती की थाली, खंबा, रामटका, वाद्य साधनों में ढोलक, मंजिरा, तुलसीदास पर गुंडों द्वारा हुए हमले में चाकू का प्रयोग, लाठियां, सिंहासन, तख़्त, तलवार, भाला, घाट की सीढ़ियाँ, तुलसीदास की कुटिया, ठेला, काग़ज़ और क़लम, टोकरा, बिछावन, दीपक आदि मंचीय उपकरण नाट्य मंचन में सहायक सिद्ध होंगे।

निष्कर्षतः असग़र वजाहत का 'महाबली' नाटक मंचीयता की दृष्टि से सफ़ल नाटक है। इसमें नाटककार ने अन्य सभी नाटकों की भांति मंचीयता की संभावनाओं को सृजित किया है। नाटक में यथास्थान दिए गए रंग संकेत अभिनयानुकूल हैं। नाट्यभाषा के रूप में खड़ीबोली पर अवधी का रंग चढ़ाकर लिखे संवाद पात्रानुकूल हैं और कथ्य को लक्ष्य तक पहुंचाने में सफ़ल होंगे। अभिनय की दृष्टि से तुलसीदास का अभिनय करने वाले पात्र को अवधी भाषा में लिखित रामचरितमानस की चौपाइयों को कंठस्थ करते हुए सही उच्चारण करना आवश्यक है। वही अकबर के अभिनय में उर्दू शब्दों के उच्चारण में सतर्कता बरतना ज़रूरी है। तत्कालीन देशकाल वातावरण को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने के लिए ध्वनि एवं प्रकाश योजना के साथ गीत-संगीत के बारे उचित निर्देश दिए हैं। कुल मिलाकर असग़र वजाहत के 'महाबली' नाटक में रंगमंचीयता के सभी तत्व मौजूद हैं जो उसे अन्य मंचीय नाटकों की भांति सफ़लता प्राप्त करने में मददगार साबित होंगे। वजाहत अपनी नाट्य रचनाओं को दृश्यों द्वारा प्रस्तुत करते हैं। स्वतंत्र दृश्यों में प्रस्तुत कथावस्तु को निर्देशक की नज़र से देखेंगे तो मंचन की दृष्टि से यह बहुत ही सहायक है। कोई भी नाटक जब मंच पर खेला जाता है तब उस वस्तु को रोचक बनाने के लिए झाँकियों का निर्माण अत्यंत आवश्यक होता है। वजाहत की नाट्यलेखन शैली इस दृष्टि से अत्यंत अनुकूल है। परिणामतः महाबली नाटक सफ़लता से मंचपर खेला जाएगा इसमें किसी भी किन्तु परंतु की गुंजाइश नहीं है।

संदर्भ सूची -

1. असग़र वजाहत, महाबली, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, 2019 भूमिका से पृष्ठ. 4-5
2. वही. पृष्ठ. 75
3. वही. पृष्ठ. 93
4. वही. पृष्ठ. 51
5. वही. पृष्ठ. 15
6. वही. पृष्ठ. 81
7. वही. पृष्ठ. 65
8. वही. पृष्ठ. 81
9. नेमिचन्द्र जैन, रंगदर्शन राधाकृष्ण, प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ. 67
10. असग़र वजाहत, महाबली, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, 2019 पृष्ठ. 60
11. वही. पृष्ठ. 96

****